ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ. चन्दन कुमार
पी.एच.डी (इतिहास), नेट(यू.जी.सी.)
पूर्व शोध–छात्र सी.एम.जे.यूनिवर्सिटी,जोराबाट(मेघालय)

सारांश– भारत राष्ट्र की अवधारणा में एक अति महत्वपूर्ण अर्थबोध को समाहित करने वाला वैचारिक और ऐतिहासिक संप्रेषण भारतीय राष्ट्रवाद है। भारतीय राष्ट्रवाद का आधार आधुनिकता पर पूरानता और नवीन पर मृत का संघात था। यह भारतीय राष्ट्रवाद उस पुनर्जागरण के माध्यम से आया जिसने पश्चिमी सभ्यता से तर्क समानता और स्वतंत्रता की भावना प्राप्त करके भारत के प्राचीन गौरव को स्थापित करने का प्रयास करता है। भारतीय राष्ट्रवाद सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, एवं लोकतंत्र का परिमार्जित स्वरूप है। प्राचीन भारतीय समाज के अंतर्गत राष्ट्रवाद की भावना एवं देशभक्ति के मौलिक तत्व प्रतिमान आदि किसी न किसी रूप में सदैव रहे है। 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्य ने देश में विदेशी शोषणपूर्ण नीति एवं कूटनीति अपनाकर भारत की राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति को जर्जर एवं दयनीय बना दिया था। अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार एवं संचार के परिणाम स्वरूप भारत की बौद्धिक शक्ति का जागरण हुआ। यहीं से भारतीय राष्ट्रवाद का उदय हुआ। भारत में ब्रिटिश सम्राज्यवाद के दो विरोधी दृष्टिकोण सामने आते हैं– विकासवादी और प्रक्रियावादी लेकिन इन दोनों ही स्वरूप ने राष्ट्रवाद के जन्म में सहायता प्रदान की। इसी राष्ट्रवाद के कारण जो राष्ट्रीय आंदोलन का आरंभ हुआ अपने आप में एक अनूठा आंदोलन था फलस्वरूप भारत में राजनीतिक जागृति के साथ–साथ सामाजिक तथा धार्मिक जागृति का सूत्रपात हुआ

मुख्य शब्द– भारतीय राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय आंदोलन, भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण।

प्रस्तावना– विदेशी शासन अंततः एक राष्ट्रवाद को जन्म देता है। अर्थात भारतीय राष्ट्रवाद का उदय राजनीतिक परतंत्रता के समय में हुआ। भारतीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद का अवघारणात्मक स्वरूप में राजनीतिक अवश्य ही अनिवार्य चरण के रूप में स्थापित रहा, किंतु राष्ट्रवाद के संकल्प से पूर्व समाजिक शक्ति, विश्वास और आस्था के क्षेत्रों में उन्नयन को निर्णायक प्राथमिकता दी गई। ब्रिटिश भारत के विशिष्ट परिस्थितियों के कारण तथा भारतीय समाज में उत्पन्न और विकसित सामाजिक कारकों की अंत क्रिया के परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रवाद विकसित हुआ। राष्ट्रीयता के उत्थान की प्रक्रिया भारत में बहुत ही जटिल एवं बहुआयामी रही है। भारत का विशाल जनसमुदाय लगभग सभी विषयों जैसे भाषा, धर्म, राजनीति

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

इत्यादि पर विभाजित था। राष्ट्र निर्माण की ऐतिहासिक प्रक्रिया देश और काल की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति के अनुसार भिन्न–भिन्न समाजों में भिन्न–भिन्न रही है। 18वीं शताब्दी में राष्ट्रीयता शासक वर्ग की आकांक्षा और प्रयास का विषय थी। 19 वीं सदी की राष्ट्रीयता ने मध्यम वर्ग के साथ–साथ बुर्जुआ आंदोलन का स्वरूप ग्रहण किया। बीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीयता जनमानस का आंदोलन है जिसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन सहभागिता का दावा करता है। अंग्रेजों के शासन काल में नवीन सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था तथा नवीन प्रशासनिक प्रणाली और नई शिक्षा के विचार से नए वर्गों का उदय हुआ। इस नवीनता के विशिष्ट प्रकृति के कारण कालांतर में ब्रिटिश साम्राज्य से टकराव आरंभ हुआ। यही भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया की आधारशिला ही नहीं प्रेरणा स्त्रोत भी बना।

अध्ययन की आवश्यकता–

राष्ट्रवाद की अवधारणा और संदर्भ परिधि आधुनिक, नवविकसित और औपनिवेशिक दासता से मुक्त परंपरागत समाजों की राजनीतिक विचार एवं क्रिया व्यवस्था में रखी जा सकती है। आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण के अध्ययन का तात्पर्य है– एक ऐसी आधुनिक काल की संकल्पना जिसमें राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं त्याग की भावना विद्यमान थी, जिसमें राष्ट्रीय हित सर्वोपरि था। वर्तमान समय में भी मानव प्रगति की दिशा में राष्ट्रवाद के महत्व को समझा जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध पत्र के आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

1. राष्ट्रवाद का अभिप्राय क्या है?
2. भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवाद के सैद्धांतिक पहलू क्या है?
3. भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में सहायक तत्व की क्या भूमिका रही है?

उपकल्पना– पूर्णा किसी भी शोध समस्या के लिए सुझाया गया वह उत्तर है जिसकी तर्कपूर्ण वैधता की जांच की जाती है। प्रस्तुत शोध विषय की निम्नलिखित उपकल्पनाएं हैंः–

1. राष्ट्रवाद देश के प्रगति के लिए आवश्यक हैं।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

2. राष्ट्रवाद की अवधारणा एवं विकास की प्रक्रिया अलग–अलग देश काल में भिन्न–भिन्न तरीकों से अभिव्यक्त होती है।

3. राष्ट्रवाद के उत्थान के अनेक तत्वों में मूल तत्व राष्ट्रीय एकता है।

4. राष्ट्र निर्माण एक सतत एवं सापेक्षिक प्रक्रिया है।

शोध पद्धति– आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न इतिहासकार की रचनाएं, पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेखों तथा विद्वानजनों के लेखनी को आधार बनाया गया है। प्रस्तुत शोध की प्रकृति ऐतिहासिक और व्याख्यात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इस पद्धति में अतीत की घटनाओं, विकास क्रमों तथा विगत अनुभूतियों का वैज्ञानिक अध्ययन या अन्वेषण किया जाता है।

साहित्यावलोकन– आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया का ऐतिहासिक विश्लेषण के संदर्भ में किए गए इस शोध के उद्देश्यों, उपकल्पना तथा शोध पद्धति का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गए साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है यथा–

1. ए. आर. देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, ट्रिनिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2014.

इस पाठ्य पुस्तक में लेखक ने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय की जटिल और बहुरंगी प्रक्रिया और उसके विभिन्न रूपों का शब्द चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। साथ ही साथ ब्रिटिश शासन के प्रभाव का तथा भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में सामाजिक शक्तियों तथा सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन की भूमिका का मूल्यांकन किया है।

2. डॉ. सत्या एम. राय (सं), भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2013.

भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद लगभग 200 वर्षों तक रहा और भारतीय जीवन एवं समाज पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के लेखकों ने ब्रिटिश भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। पुस्तक में लेखकों ने साम्राज्यवाद के सिद्धांत, भारतीय अर्थव्यवस्था, समाज, राजनीति, शिक्षा एवं संस्कृति पर उपनिवेशवाद का प्रभाव, संविधानिक विकास, राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख तत्व, राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों का वर्णन किया है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

3. राजेंद्र नाथ तिवारी, राष्ट्रवाद चिंतन एवं विकास, समदर्शी प्रकाशन, हरियाणा 2019.

राष्ट्रवाद जैसे गुण विषय को समझने के लिए लेखक का प्रयास सराहनीय है। प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रवाद शब्द की उत्पत्ति और वास्तविक अर्थ को वैदिक काल से आधुनिक काल के बीच एक कड़ी के रूप में दर्शाया गया है। दस अध्यायों में वर्णित पुस्तक ने निःसंदेह रूप से राष्ट्रवाद को लेकर भारतीय बोध को सुदृढ़ और मजबूत आधार देती है।

4. शेखर बंधोपाध्याय, प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2016.

यह पुस्तक ब्रिटिश हुकूमत, भारतीय शासकों और उसकी नीतियों के बजाय भारत के लोगों उनकी आकांक्षाओं, उनके प्रतिरोध और संघर्ष को चित्रित करती हैं पुस्तक का प्रारंभ 18 वीं सदी में भारत के राजनीतिक रूपांतरण की एक विवेचना से होता है। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य, भारतीय राष्ट्रवाद का उदय और विस्तार, गांधी युग तथा राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न कारकों को इस पुस्तक में जगह दी गई है।

5. राम लखन शुक्ला (सं) आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2008.

पाठ्यपुस्तक की शुरुआत आधुनिक भारत में इतिहास लेखन की समग्रता से किया गया है। 18 वीं शताब्दी में भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति तथा ब्रिटिश शासन के राजनैतिक, प्रशासनिक और आर्थिक प्रभावों का वर्णन शामिल है। राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी जी के नेतृत्व, संविधानिक विकास (1885–1935), देश विभाजन तथा स्वतंत्रता प्राप्ति को लेखकों ने विस्तृत रेखांकन किया है।

भारतीय राष्ट्रवाद के स्वरूप व उत्थान की प्रक्रिया

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से औपनिवेशिक नीतियों और भारत के आर्थिक शोषण के विरुद्ध राष्ट्रीय चेतना का विकास प्रारंभ हो गया। मुख्य रूप से ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नीतियों की चुनौती के प्रत्युत्तर में भारतीयों ने एक राष्ट्र के रूप में सोचना प्रारंभ किया। निःसंदेह, भारत विविधताओं का देश रहा है उसके विस्तृत आकार और उदार विचारधारा के अंतर्गत विभिन्न धर्म, भाषाएं, रीति–रिवाज आदि पनपते रहे हैं, परंतु फिर भी इन विविधताओं के पीछे हम एकता पाते हैं। भारतीय राष्ट्रवाद अर्वाचीन तथ्य है। ब्रिटिश शासन और विश्व शक्तियों के कारण

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

तथा भारतीय समाज में उत्पन्न और विकसित अनेक भावना एवं वस्तुनिष्ठ कारकों की क्रिया प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ब्रिटिश काल में भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।[1]

राष्ट्रवाद का अर्थ होता है कुछ लोगों का समूह जो एक निश्चित भौगोलिक की सीमाओं में निवास करते हो, जिनकी एक भाषा, एक रीति–रिवाज तथा एक विचारधारा हो। अर्थात् राष्ट्रों के रूप में जन समुदायों का एकीकरण दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया की परिणति है।[2] और राष्ट्रवाद की अवधारणा किसी राष्ट्र के सदस्यों में पाई जाने वाली सामुदायिक भावना है जो उनका संगठन मजबूत करती है। अतः हम कह सकते हैं कि राष्ट्र की राजनीतिक अभिव्यक्ति का आधुनिक और अंतिम लक्ष्य राष्ट्रवाद है। सैद्धांतिक दृष्टि से राष्ट्रवाद मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विचार हैं। राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए एकता का आधार प्राप्त होना आवश्यक है। भाषा, जाति, धर्म, संस्कृति, भौगोलिक एकता तथा आर्थिक हित आदि ऐसे कई तत्व हैं, जिसकी सहायता से राष्ट्र का विचार उत्पन्न होता है और अंत में राष्ट्र की भावना उत्पन्न होती है। एक बार इस भावना को उत्पन्न होने के बाद फिर यह निरंतर बलवती होती जाती है और वह राष्ट्र स्वतंत्रता प्राप्त करता है और उसे बनाए रख सकता है।

भारत में विविधता के अनेक कारण रहे हैं। फिर भी धार्मिक एवं ऐतिहासिक कारणों से राष्ट्रीयता की भावना प्रारम्भ से ही बनती रही है। टॉयनबी के अनुसार, ''राष्ट्रवाद एक शक्ति है जो समाज या जाति को राज्य के अंतर्गत एक निश्चित तौर में निरंकुश शक्तियों के विरुद्ध अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एक साथ रहने को बाध्य करती है।''[3] मूलत राष्ट्रवाद के प्रकटीकरण में व्यक्ति के भावनात्मक प्रेम की दो अनुभूतियों का संयोजन होता है प्रथम व्यक्ति की मातृभूमि पर आधारित देशभक्ति, द्वितीय व्यक्ति का किसी राजनीति इकाई से व्यक्तिगत जुड़ाव, मानव कि इन दोनों अनुभूतियों का संयोजन ही राष्ट्रवाद है। जॉन स्टूअर्ट मिल ने लिखा है, ''मानव जाति का कोई हिस्सा एक राष्ट्र की स्थापना की बात कह सकता है यदि उसके लोग उस समान अनुभूति के आधार पर आपस में जुड़ते हैं जिनका उनमें और दूसरों में अस्तित्व ही नहीं होता है।''[4]

जब कोई जनसमूह केवल भाषा, धर्म, इतिहास, जाति आदि तत्वों के फलस्वरुप भावनात्मक एकता में बद्ध रहता है और अपने को उसी प्रकार के जनसमूह से भिन्न समझता है उसे राष्ट्रवाद की संज्ञा देते हैं। लेकिन यदि उस जनसमूह में राजनीतिक रूप से संगठन की भावना आ जाती है या वह राजनीतिक रूप से संगठित हो जाता है तब उसे राष्ट्र कहते हैं। राष्ट्रवाद राष्ट्र की प्रारंभिक स्थिति है राष्ट्रवाद मूल रूप से आधुनिक काल की संकल्पना है जिसमें व्यक्ति स्वयं

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

को उस से जोड़कर देखता है, जो उसके अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं त्याग के रूप में परिलक्षित होता है।

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आधारित थी। उन्होंने संपूर्ण आर्थिक संसाधनों का प्रयोग अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए किया। ग्रामीण आर्थिक जीवन की मूल व्यवस्था का श्रम विभाजन निम्न कोटि का था यह कृषि और उद्योग के अपर्याप्त विभाजन पर आधारित था।[5] विभिन्न जातियों में बटे होने के कारण गांव में व्यक्तिगत पहल शक्ति दुस्साहस की भावना और नए रास्तों की खोज करने की आकांक्षा को कोई प्रश्रय नहीं मिल सका। राष्ट्रवाद के लिए सारे समुदाय की एकता में पिरोये जाना आवश्यक है। राष्ट्रवाद तत्व वर्गों की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को दर्शाते हैं, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलू भी होते हैं। भारत में विभिन्न समुदाय और संस्कृति के मिलन से ही भारत एक राष्ट्र के रूप में पहचान पाया है।

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में अंग्रेजों ने अंग्रेजी शिक्षा का प्रोत्साहन स्वार्थ बस दिया। शिक्षा नीति के निर्माण में भारत के अंग्रेजी शासकों ने इस सिद्धांत का अक्षरतः पालन किया कि, ''यदि किसी देश को दास रखना है तो उसके साहित्य और संस्कृति का विनाश कर देना चाहिए।''[6] आधुनिक शिक्षा के कारण सामाजिक गतिशीलता, वैज्ञानिक वैचारिक एवं औद्योगिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ। अंग्रेजों को ऐसा प्रतीत होता था कि भारत पूर्णतः परिवर्तित राष्ट्र बन जाएगा। धर्म के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन होगा और हिंदूवाद का स्थान यूरोपीय ज्ञान को प्राप्त होगा। जनमत पर नियंत्रण केवल एक धार्मिक वर्ग के पास नहीं होगा। ज्ञान और शक्ति जनता के हाथ में होगी जो धार्मिक और सामाजिक सुधारों में सहयोग देंगे।[7] आधुनिक शिक्षा का प्रसार भारतीयों द्वारा भी किया गया राजा राममोहन राय भारत में आधुनिक शिक्षा के अग्रणी थे उनके अनुसार पाश्चात्य साहित्य, विज्ञान एवं दर्शन द्वारा भारतीयों का नैतिक सुधार हो सकता है और भारत खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त करेगा।[8] जहां एक तरफ अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने प्राचीन परंपराओं और स्थापित विश्वासों को कमजोर किया और एक नई सभ्यता और संस्कृति का मार्ग प्रशस्त किया,[9] वहीं दूसरी तरफ से अंग्रेजी शिक्षा राष्ट्रवाद के उत्थान में प्रगतिशील भूमिका का निर्वहन किया। अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा भारतीय एक भाषा संपर्क के रूप में राष्ट्रवादी विचारों का आदान प्रदान कर सकें।

कंपनी ने अंग्रेजी राज्य की स्थापना, प्रसार एवं नियंत्रण रखने के लिए तथा भारतीय व्यापार पर एकाधिकार कायम रखने के लिए परिवहन में सुधार

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

आवश्यक समझा इसी उद्देश्य से रेलों का विकास, डाक तार की व्यवस्था तथा सड़कों का निर्माण किया गया।[10] लेकिन आवागमन के इन नवीन साधनों के कारण ही भारतीय जनता को सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर एक सूत्र में बांधने पर सहायक सिद्ध हुआ। राष्ट्रवादी विचारों का आदान–प्रदान हुआ जिससे राष्ट्रीय आंदोलन को शक्ति प्राप्त हुई निसंदेह यातायात के नवीन और आधुनिक साधनों का भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में सशक्त योगदान रहा ।

राष्ट्रीय जीवन में जनजीवन को प्रभावित करने वाली शक्ति के रूप में समाचार पत्र और साहित्य का योगदान अद्वितीय है। समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार–प्रसार कर भारतीय जनता को राजनैतिक रूप से शिक्षित किया। जिससे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का राजनीतिक स्वरूप उभरकर सामने आया। ए. आर. देसाई लिखते हैं, ''सतरहवीं, अठारहवी और उन्नीसवीं शताब्दियों में समन्वित होने के लिए, सामंती अभिजात्य द्वारा परिपोषित सामंती अनैक्य के विरुद्ध संघर्ष के लिए, राष्ट्रीय राज्य, समाज और संस्कृति के स्थापना के लिए यूरोप के देशों ने समाचार पत्रों के दुजैय अस्त्र का उपयोग किया।[11] भारत की राजनीतिक जीवन पर गहरी छाप छोड़ने वाले अखबारों और पत्रिकाओं में प्रमुख थे– संवाद कौमुदी, ब्रह्मानीकल, मिरातुल अखबार, समाचार चंद्रिका, प्रभाकर पत्र, मुंबई समाचार, अमृत बाजार पत्रिका।[12]

भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान में अनेक कारकों के साथ–साथ सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामाजिक और धार्मिक नवजागरण ने भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया यह भारत की एक राष्ट्रीय जागृति थी जिसने पश्चिमी सभ्यता से तर्क, समानता और स्वतंत्रता की भावना प्राप्त करके भारत के प्राचीन गौरव को यथावत स्थापित करने का प्रयत्न किया। तथा प्राचीन भारतीय सभ्यता के दोषों को दूर कर एक नवीन राष्ट्रीय आधार प्रदान किया।[13] भारत में फैली बुराइयों जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा तथा छुआछूत जैसे जटिल और ज्वलंत समस्याओं के समाधान के लिए ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन तथा थियोसोफिकल सोसायटी ने सराहनीय कार्य किए जिससे समाज में जनजागृति पैदा हुआ।[14] अंततः भारतीय समाज में आत्म बल एवं विश्वास पुनः स्थापित हुआ और राष्ट्रीयता की भावना को जागृति मिली।

जिस समय भारतीय राष्ट्रवाद उत्थान की प्रक्रिया से गुजर रहा था उसी समय अंग्रेजों ने ब्रिटेन के कारखानों में बने माल की बिक्री के लिए भारत को एक उपयोगी मंडी बनाने के लिए तथा ब्रिटेन के कारखाना के लिए भारत से सस्ता कच्चा माल प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत के प्राचीन हस्तशिल्प और उद्योगों

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

को नष्ट कर दिया।[15] ऐसी स्थिति में राष्ट्रवादियों द्वारा आर्थिक परिवर्तन के माध्यम से उत्पन्न सामाजिक वर्ग ने भी राष्ट्रवाद को प्रेरित किया। ब्रिटिश साम्राज्य का एकीकृत प्रशासन व्यवस्था भी कालांतर में राष्ट्रवाद के उदय का कारण बना। अंग्रेजों के एकीकृत प्रशासनिक व्यवस्था से, भारत में भौगोलिक तथा सांस्कृतिक एकता (जो करीब करीब पहले भी थी) के साथ राजनैतिक एकता स्थापित हुई, जो भारतीय को भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर एक सूत्र में बांधा, जिससे राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई।

सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं की थी तरह 19वीं शताब्दी में कुछ राजनीतिक संगठन भी भारत में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। ऐसी संस्थाओं में लैंडहोल्डर्स सोसायटी, ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन, मद्रास नेटिव एसोसिएशन, बम्बई एसोसिएशन इत्यादि प्रमुख हैं।[17] राष्ट्रवादी गतिविधियों के सक्रियता के कारण राष्ट्रीय आंदोलन लगातार मजबूत होते जा रहा था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद भारत में राजनीतिक जागृति का नया अध्याय आरंभ हुआ। कांग्रेस के मंच से देश के सभी प्रतिभाशाली बुद्धिजीवियों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई तथा राष्ट्रवाद को एक नई दिशा दी।[18] अंग्रेजों की प्रजातियां विभेद की नीति से भारतीय जनमानस प्रभावित हुआ। फलतः उनमें राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई और ब्रिटिश साम्राज्य को धृणा के नजर से देख लगे। भारतीय राष्ट्रीयता के उत्थान और विकास में लीटन और रिपन की प्रतिक्रियावादी नीतियां भी कम उत्तरदाई नहीं है। लिटन के साम्राज्य हित कार्यों के कारण भारतीय चेतना की उदासीनता दूर हुई, जिससे राष्ट्रवाद पनपने में सहायक हुआ वहीं दूसरी तरफ से रिपन के काल में इल्बर्ट बिल विवाद से भारतीयों में राष्ट्रीय आंदोलन को तीव्र करने की प्रेरणा मिली।

निष्कर्ष

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की अवधारणा आधुनिक, नवविकसित और उपनिवेश की दासता से मुक्त परंपरागत समाजों की राजनीतिक एवं क्रिया व्यवस्था में रखी जा सकती है। राष्ट्रवाद ने आधुनिक मानव समुदाय के आंतरिक संबंधों, विचारों, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रघटनाओं और सर्वांगिण विकास के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। भारत के संदर्भ में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जिन आंदोलनों का सहारा लिया गया, उसका ऐतिहासिक महत्व यह है कि उन्होंने सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं में जो परिवर्तन किया है, उसको आंतरिक सूत्रबधता के कारण राष्ट्रवाद का उत्थान होता रहा। ब्रिटिश शासन के विकासषील

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

स्वरूप ने यदि राष्ट्रवाद के जन्म के लिए अप्रत्यक्ष रूप से योगदान किया तो उसके प्रतिक्रियावादी स्वरूप ने इस प्रक्रिया को तेज किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. देसाई, ए. आर. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, ट्रिनिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2014, पृ. 4.
2. सिंह, ए.पी. (सं), भारत में राष्ट्रवाद, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2014, पृ. 5.
3. टॉयनबी, ए. नेशनलिटी इन हिस्ट्री एंड पॉलिटिक्स, थर्ड एडिशन, लंदन 1949 पृ. 12.
4. हबसन, जे., इंपिरियलिज्म, गौरव पब्लिकेशन, दिल्ली, 1979, पृ. 3.
5. राय, डॉ. सत्या एम., भारत में उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय , दिल्ली, 2013, पृ. 110.
6. शुक्ला, आरं. (सं), आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय , दिल्ली, 2008, पृ. 294.
7. लुणिया, बी.एन., आधुनिक भारत का इतिहास –जनजीवन और संस्कृति कमल प्रकाशन, इंदौर, 2005, पृ. 572.
8. भट्ट, जी., भारतीय नवजागरण प्रणेता तथा आंदोलन, साहित्य सदन देहरादून, 1968, पृ. 211.
9. श्याम, डॉ. सीताराम झा, भारतीय स्वतंत्र संग्राम की रूपरेखा, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2000, पृ. 6–7.
10. कुमार डी. (सं), द केंब्रिज इकोनामिक हिस्ट्री इन इंडिया, भाग 2, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज, पृ. 736
11. देसाई, ए. आर., पूर्वोल्लिखित पृ. 177.
12. राय, डॉ. सत्या एम.(सं), पूर्वोल्लिखित पृ. 222.
13. चंद्र, विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2012, पृ. 115.

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

14. सिंह अयोध्या भारत का मुक्ति संग्राम ग्रंथ शिल्पी दिल्ली 2012 पृष्ठ 41–42.

15. पाण्डेय, डी. आधुनिक भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 2015 पृ. 67.

16. सरकार, एस. आधुनिक भारत (1885–1947), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009, पृ. 120–121.

17. शेखर, बी., पलासी से विभाजन तक और उसके बाद, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2016, पृ. 214.

18. चंद्र, विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय , दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2010, पृ. 47.

 Copyright © 2020 Authors